जापान का साथ

भारत और जापान के रिश्ते यों तो सदियों पुराने हैं, लेकिन पिछले कुछ सालों में दोनों देशों के संबंधों में जो मजबूती आई है, वह उल्लेखनीय है। भारत के विकास में जापान जिस तरह से आर्थिक और तकनीकी मदद दे रहा है, वह दोनों देशों के रिश्तों को नई ऊंचाइयां प्रदान करने वाला है। जी-20 देशों के शिखर सम्मेलन में पहुंचे भारत के प्रधानमंत्री ने जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे से मुलाकात के दौरान वैश्विक अर्थव्यवस्था और भगोड़े आर्थिक अपराधियों के मसले पर जो बात की है, उससे जी-20 बैठक में इन मुद्दों पर भारत की चिंताओं को लेकर दबाव बनना तय है। जापानी प्रधानमंत्री ने इस बात से सहमित जताई कि जी-20 की पिछली बैठक में भगोड़े आर्थिक अपराधियों को संबंध में भारत ने जो कहा था, उसे गंभीरता से लेने की जरूरत है और समूह बीस के देशों को भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के तहत इस पर आगे बढ़ना चाहिए। भारत आर्थिक अपराध कर दूसरे देशों में भाग जाने वाले अपराधियों से निपटने में लगा है। समस्या यह है कि ऐसे अपराधियों को वापस लाना इसलिए संभव इसलिए नहीं हो पा रहा है कि कई देशों के साथ भारत की प्रत्यर्पण संधि नहीं है। जिनके साथ है उनके अपने कानून काफी जटिल हैं और आर्थिक अपराध करने वाले इसका भरपूर फायदा उठा रहे हैं। ऐसे में अगर जी-20 समूह के देश इस मामले को गंभीरता को लें तो ऐसे अपराधियों को काबू करना आसान हो सकता है।

भारत के औद्योगिक विकास में जापान आज एक प्रमुख सहयोगी है। बड़ी संख्या में जापानी कंपनियां भारत में काम कर रही हैं। भारत और जापान के कई साझा उद्यम चल रहे हैं। पिछले पांच साल के दौरान दोनों देशों के बीच विकास और ढांचागत क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए जो समझौते हुए उनमें सबसे बड़ी परियोजना तो बुलेट ट्रेन है। इस परियोजना के लिए जापान ने भारत को उनासी हजार करोड़ रुपए का कर्ज दिया है। यह ट्रेन अमदाबाद से मुंबई के बीच चलनी है। इसी तरह स्मार्ट सिटी परियोजना में जापान ने भारत को हर तरह की मदद का भरोसा दिया है। वाराणसी में विश्वस्तरीय सम्मेलन केंद्र बनाने और शहर को क्योटो जैसा बनाने के लिए जापान ने भारत को दो सौ करोड़ रुपए अलग से दिए हैं। भारत का वाहन उद्योग क्षेत्र आज जिस रफ्तार से बढ़ रहा है उसमें सबसे बड़ी भूमिका तो जापान की है। जापान की कई कंपनियों ने भारत में अपने कारखाने तक लगा रखे हैं, ताकि भारतीय बाजार की जरूरतों को पूरी किया जा सके।

आर्थिक और प्रौद्योगिकी के अलावा जापान और भारत के बीच सरक्षा. निवेश, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, कृषि, स्वास्थ्य और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में भी काम चल रहे हैं। भारत के 'मेक इन इंडिया' को भी जापान का पूरा समर्थन है। रक्षा और सामरिक मामलों में भी जापान भारत के साथ है। दो साल पहले जब जापानी प्रधानमंत्री भारत की यात्रा पर आए थे तब नागर विमानन, कारोबार, शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, खेल क्षेत्र सिहत विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच पंद्रह समझौते हुए थे। इसके अलावा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने पर दोनों देशों के बीच सहमति बनी थी। भारत आज एशिया का प्रमुख देश है। पिछले पांच साल में भारत और जापान के प्रधानमंत्री बारह से ज्यादा मुलाकात कर चुके हैं। जापान भारत के साथ रिश्तों की अहमियत को बखूबी समझता है। इसलिए जापानी प्रधानमंत्री तो इस बात को कहते भी हैं कि भारत के साथ मधुर संबंध रखना जापान के हित में है।

धियाना के केंद्रीय कारागार में गुरुवार को जो हुआ, उससे एक बार फिर यही लगता है कि जिन जगहों को कैदियों को रखे जाने के लिहाज से सबसे संवेदनशील और सुरक्षित जगह माना जाता है, वहां निगरानी से लेकर बाकी सभी स्तरों पर किस तरह की लापरवाही बरती जा सकती है। गौरतलब है कि जेल में दो गुटों के बीच हिंसक टकराव में एक कैदी की मौत के बाद वहां बड़ी संख्या में मौजूद कैदियों के बीच आक्रोश फैल गया और वे अराजकता और हिंसा पर उतर आए। कैदियों ने जेल की कैसी हालत बना दी थी, उसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उन्होंने जेल में कुछ पुलिसकर्मियों को बंदी बना लिया, उनके हथियार छीन लिए और पिटाई भी की। इसके बाद पता चलने पर जेल के अधिकारी और जवान अपने साथियों को छुड़वाने पहुंचे और इस दौरान ही कैदियों ने पुलिस पर फायरिंग और पत्थरबाजी शुरू कर दी और दस बैरकों को नुकसान पहुंचाया। सवाल है कि जिन जेलों को उच्च स्तर वाली सुरक्षा प्रणाली से लैस माना जाता है, उसकी चारदीवारी के भीतर इस तरह की अराजकता का माहौल कैसे बन गया! जेल प्रशासन का कैदियों पर जैसे कोई नियंत्रण ही नहीं रह गया था, इसीलिए कैदियों को उत्पात करने में उन्हें कोई असुविधा नहीं हुई।

विडंबना यह है कि जिन जेलों में साधारण से लेकर खूंखार कैदी तक को रखने की व्यवस्था होती है, वहां इस तरह के हंगामे से निपटने के पर्याप्त इंतजाम नहीं थे। यही वजह है कि भारी पैमाने पर कैदियों की ओर से की गई हिंसा पर काबू पाने में जेल प्रशासन को करीब चार घंटे लग गए। हालत यह थी कि न केवल नब्बे राउंड गोलियां चलीं, बल्कि कैदियों ने समूची घटना का फेसबुक पर सीधा प्रसारण भी किया। अंदाजा लगाया जा सकता है कि बेलगाम कैदियों के सामने जेल की सुरक्षा व्यवस्था किस कदर लाचार थी और स्थिति पर नियंत्रण में अगर थोड़ी देर होती तो आक्रोशित कैदी और क्या कर सकते थे। यह एक सामान्य तथ्य है कि जेल में बंद ज्यादातर कैदी चूंकि आपराधिक पृष्ठभूमि के होते हैं, इसलिए उनका ऐसा रुख अख्तियर कर लेना कोई हैरानी की बात नहीं है। लेकिन अगर ऐसे में उन्हें कोई बहाना मिल जाए तो इसके लिए किसकी जवाबदेही बनती है? आखिर जिस कैदी की मौत पर कैदियों के बीच आक्रोश फैला, वह स्थिति क्यों पैदा हुई और क्या उससे बचा नहीं जा सकता था?

जेलों में बंद कैदी सजा काट रहे हों या विचाराधीन हों, उन्हें एक अनुशासन में रखना जेल प्रशासन की जिम्मेदारी होती है। इसके लिए सबसे ज्यादा इस बात का ध्यान रखने की जरूरत है कि सुरक्षा-व्यवस्था के पर्याप्त इंतजाम हों और उसमें कोई ढील नहीं हो। लेकिन जेलों में अव्यवस्था से लेकर ऐसी खबरें आम हैं कि जेलों के भीतर भी कैदियों को मोबाइल रखने या दूसरी कई तरह की स्विधाएं मिल जाती हैं। बिना जेलकर्मियों की मिलीभगत के या फिर घोर लापरवाही के ऐसा होना संभव नहीं होता। लेकिन इस क्रम में जिस तरह की अराजकता फैलती है, उससे सजा की प्रकृत्ति या जेल में रहने के नियम-कायदे एक तरह से बेमानी हो जाते हैं। लुधियाना जेल में अराजकता और हिंसा जैसे हालात पैदा होते हैं तो उसके लिए आखिर किसकी जवाबदेही बनती है ? जेलों में सुरक्षा-व्यवस्था का पूरी तरह चौकस रहना केवल कैदियों पर नियंत्रण के लिहाज से नहीं, बल्कि कानून की हिफाजत के लिए भी जरूरी है। इसमें कोताही से समूची व्यवस्था पर सवाल उठता है।

कल्पमेधा

लगन उलटी दिशा में मनुष्य को नहीं दौड़ा सकती, जिस प्रकार तेज बहती नदी अपने प्रवाह के विरुद्ध नौका नहीं बहा सकती। - फील्डिंग

राष्ट्रवाद के रास्ते

आलोक पांडेय

राष्ट्रवाद की जो अवधारणा आज सामान्यजन में प्रचलित है वह छिछले राष्ट्रवाद को प्रदर्शित करती है। एक राष्ट्र को आगे दिखाने के लिए उसके बरक्स एक और राष्ट्र को रखना होगा, और न केवल रखना होगा अपितु उसे

कमजोर भी दिखाना होगा ताकि उनका अपना राष्ट्र मजबूत दिख सके। यह सच्चे अर्थों में राष्ट्रवाद नहीं है।

रत में हाल में आम चुनाव होकर चुके हैं। जनता के बीच बहुत सारे मुद्दे पक्ष और विपक्ष की ओर से रखे गए। सत्तारूढ़ पक्ष की ओर से राष्ट्रवाद के मुद्दे को सामने लाया गया। इस मुद्दे पर काफी बहस भी चली। सब अपने-अपने विवेक से राष्ट्रवाद को परिभाषित करते रहे। लेकिन राष्ट्रवाद असल में है क्या? इसके सही स्वरूप को समझने की जरूरत है। दरअसल, राष्ट्रवाद एक आधुनिक अवधारणा है जो पूरे विश्व में आधुनिक चेतना आने के बाद सामने आई। राष्ट्र एक तरह से काल्पनिक समुदाय होता है जो अपने ही समूह के सदस्यों के सामृहिक विश्वास, इतिहास, आशा-आकांक्षा, कल्पना एवं राजनीतिक समझ जैसी मान्यताओं पर आधारित होता है। इन मान्यताओं को लोग उस समूचे समुदाय के लिए गढ़ते हैं ताकि वे अपनी वही पहचान कायम रख सकें। राष्ट्र निर्माण के इन तत्त्वों पर विचार करें तो राष्ट्र की अवधारणा

को आसानी से समझा जा सकता है।

कोई भी राष्ट्र बिना विश्वास के निर्मित नहीं हो सकता। विश्वास एक अमृर्त संकल्पना है। यही अमृर्त विश्वास ही राष्ट्र को बांधे रखने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक राष्ट्र का अस्तित्व तभी तक कायम रह सकता है जब तक कि लोगों में यह विश्वास बना रहे कि वे एक-दूसरे के साथ हैं। राष्ट्र का एक जरूरी हिस्सा है उसका अतीत। बहुत से समुदाय अपने को एक राष्ट्र के रूप में मानना शुरू कर देते हैं, क्योंकि उनकी अपनी स्थायी ऐतिहासिक पहचान की भावना होती है। स्थायी पहचान को प्रदर्शित करने के लिए वे साझी स्मृतियों, ऐतिहासिक साक्ष्यों और कथा-कहानियों के माध्यम से अपने एक साझे इतिहास-बोध को निर्मित करते हैं। इस प्रकार वे यह बता पाने में सक्षम होते हैं कि उनका एक राष्ट के रूप में अटूट व लंबा इतिहास रहा है और उसका

ठोस आधार व प्रमाण उनके पास मौजूद है। इस प्रकार वे सभ्यतामूलक नैरंतर्य व विरासत को परिपुष्ट करते हैं। इसी तरह एक अन्य आधार जिस पर राष्ट्र की नींव खड़ी होती है, साझी राजनीतिक पहचान व सामाजिक समझ है कि हमें किस तरह का राज्य चाहिए? हमारे समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक वैविध्य भरपूर है। ऐसे में क्या हम एकांगी दृष्टिकोण वाली राजनीतिक समझ को लेकर चलें जो संकीर्ण हो या फिर ऐसे समन्वयकारी दृष्टिकोण को लेकर चलें जो सभी के हितों को साथ लेकर चलने वाली हो ? चूंकि हमारा समाज वैविध्यपूर्ण है, इसलिए हम यही चाहेंगे कि किसी के हित को हम न छोड़ते हुए समेकित रूप से आगे बढें।

अगर भारत के उदाहरण से समझें तो हम पाएंगे कि यहां अनेक धर्म, भाषा, जाति, यदि सबको समेटते हुए आगे बढ़ना है तो सबके हितों का खयाल भी रखना होगा। सभी लोगों को यह विश्वास दिलाना होगा कि कोई किसी के क्षेत्र के अतिक्रमण करने का प्रयास नहीं करेगा और भारत का संविधान इस बात की गारंटी देता है। यही कारण है कि लोग इस एक विश्वास पर एक साथ रह रहे हैं। हमने एक राष्ट्र के रूप में, एक निश्चित भूभाग के अंतर्गत कछ साझे राजनीतिक आदर्शों का निर्माण भी किया है एवं वर्तमान में लोकतंत्र का आदर्श हमारे लिए सर्वोपरि है। हमने राष्ट्र के इन आधारों को समझा, इन सबको मिला कर जो एक अमूर्त समुदाय के रूप में जो हम अपने अंदर विकसित करते हैं कि

हमारा राष्ट्र ऐसा हो जाए, हम दुनिया के सिरमौर बनें, सच्चे अर्थों में वही राष्ट्रवाद है। सभ्यतामूलक नैरंतर्य, विरासत, विश्वास, आशा-आकांक्षा और राजनीतिक समझ को लेकर राष्ट्र के प्रति साझी व बलवती भावना ही राष्ट्रवाद है।

हम अपने अतीत के आधार पर स्वयं को विश्व गुरु मानते रहे हैं। परंतु वर्तमान वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में स्थितियां ठीक वैसी ही नहीं हैं। हमने गुलामी के लंबे दौर को देखा और उसके कटु अनुभव भी महसूस किए। और इन सबके के बीच धीरे-धीरे हमारी एक साझी विरासत तैयार होती रही। दासता का सबसे बुरा रूप है ग्लानि की दासता, क्योंकि तब लोग अपने में विश्वास खोकर निराशा की जंजीरों में जकड़ जाते हैं। हमें बार-बार बताया गया है कि एशिया अपने अतीत में जीवित रहता है। एशिया के बारे में यह भी कहा जाता है कि वह प्रगति के पथ पर कभी



रीति–रिवाज के लोग रहते हैं। एक राष्ट के रूप में अग्रसर नहीं हो सकता, क्योंकि उसने अपना मंह पीछे की तरफ मोड़ रखा है। हमने न केवल इस दोषारोपण को स्वीकार कर लिया, अपितृ अब इसमें यकीन भी करने लगे हैं। भारत की प्रवृत्ति भी बहुत हद तक एशिया में रहने के कारण वैसी ही रही। आज भी हम अपने साझे इतिहास, विश्वास व परंपरा को देख सकते हैं, दंभ भर सकते हैं, लेकिन क्या इसी से वर्तमान राष्ट्र की भावना मजबूत होगी? क्या अतीत के गौरवगान से हम फिर से विश्व गुरु का तमगा हासिल कर पाने में सफल होंगे?आज अवधारणा भी बदल गई है, विश्व गुरु नहीं आज सबको विश्वशक्ति होना है। या आवश्यकता है कि समुचे स्तर पर वैसे कार्य किए जाएं कि अपने राष्ट्र को फिर से बेहतर

स्थिति में ला सकें। अगर आज भी हम अतीत के गौरव पर वर्तमान को तौल रहे हैं, तो सच मानिए हम अपने आप को पंगु बना रहे हैं। जबकि वास्तव में हमने मजबूत बनना है।

जहां आज पश्चिमी राष्ट्रवाद का बोलबाला है, वहीं इतिहास के कल्पित अर्धसत्य एवं असत्य द्वारा, अन्य नस्लों और संस्कृतियों के बारे में किए गए झूठे प्रचार द्वारा, पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति निरंतर द्वेष के द्वारा और सामान्यतया झूठी घटनाओं के स्मृति समारोह द्वारा लोगों को घृणा तथा हर प्रकार की महत्त्वाकांक्षा का पाठ बचपन से ही पढ़ाया जा रहा है। इन प्रवृत्तियों को यथासंभव शीघ्रता से भुला देने में ही मानवता की भलाई है। यदि हम भी पश्चिमी राष्ट्रवाद की अवधारणा को अपनाएंगे तो हम भी राजनीतिक दबाव के आगे सामाजिक आदर्शों को घुटने टेकते हए देखेंगे। राष्ट्रवाद की जो अवधारणा आज

> सामान्यजन में प्रचलित है वह छिछले राष्ट्रवाद को प्रदर्शित करती है। एक राष्ट्र को आगे दिखाने के लिए उसके बरक्स एक और राष्ट्र को रखना होगा, और न केवल रखना होगा अपित उसे कमजोर भी दिखाना होगा ताकि उनका अपना राष्ट्र मजबूत दिख सके। यह सच्चे अर्थों में राष्ट्रवाद नहीं है।

> पश्चिम के राष्ट्रवादी स्वरूप में अर्थ और राजनीति के मेल के फलस्वरूप अमानवीय बना देने की प्रक्रिया लगातार जारी है। लेकिन हमें ऐसे राष्ट्रवाद की भी आवश्यकता नहीं है जो केवल अर्थ के चलते पूरी दुनिया में एक दूसरे के प्रति घृणा फैलाए और विश्व को अशांत करने में योगदान दे। भारत जिस वजह से विश्व गुरु बना था, आज उसी सिद्धांत को फिर से प्रसारित करने की जरूरत है। भारत के दर्शन में स्वयं अनेक विचारधाराएं हैं।

हमने सामंजस्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है और यही हमारी खूबी रही है। समन्वय की नैतिक भावना ही हमें महान बनाती है और हमारे कला, विश्वज्ञान व धर्म का विकास इसी आधार पर हुआ। हमने सभ्यता के शुरुआती दौर में इस बात का खयाल रखा कि लोग एक दूसरे के निकट आएं। हमें ऐसे राष्ट्रवाद की अवधारणा को अपनाना है जो पश्चिमी अर्थ व राजनीति के नियमों से संचालित न हो जो हिंसा को बढावा देने वाले हैं, बल्कि उसमें भारतीय दर्शन के तत्व मौजूद होने चाहिए, ताकि हम शांतिपूर्वक भौतिकता व आध्यात्मिकता के साथ संतुलन बना कर मानवीयता के पक्षधर बन कर विश्व में मिसाल कायम कर सकें।

वंचना की मार

सैयद परवेज

दिल्ली के एक पॉश माने जाने वाले इलाके के चौराहे पर अक्सर मैं कुछ छोटी लड़कियों को देखता हूं, जिनके हाथों में गुलाब के फूल और गुब्बारे होते हैं। वे चौराहे पर लालबत्ती होते ही वहां रुकने वाली कारों और ऑटो में बैठी सवारियों से फुल बेचती हैं। कहती हैं- 'बाबूजी ले लीजिए, केवल दस रुपए का ही है।' मैंने भी एक-दो बार उनसे फूल लिए हैं। अब सोचता हूं कि इन फूलों का करूंगा क्या, इसलिए वैसे ही पैसे दे दूं।' खैर, लोदी रोड में ही शिरडी वाले सांई बाबा का मंदिर है। इस क्षेत्र में कई बड़े संस्थान और कई मंदिर हैं। शिरडी सांई मंदिर के पास जो फूल बेचे जाते हैं, वहां पर भी चमकीले कागज में लपेटा गया एक गुलाब का फूल दस रुपए का नहीं मिलता।

जब कभी मुझे उधर जाना होता है तब यह सब देखता हूं। उन लड़िकयों के साथ एक-दो और महिलाएं होती हैं, जो पहनावे से हरियाणवी या राजस्थानी दिखती हैं। उन सभी के कपड़े मैले और फटेहाल होते हैं। वे सभी चौराहे के बीचोंबीच ही गुलाब के फूल को चमकीले कागज में लपेटती रहती

हैं। इनके साथ में कुछ पुरुष, छोटे बच्चे भी होते हैं। उनमें से एक शख्स चलने में असमर्थ थे। उनकी कमर धनुष की तरह झुकी हुई थी। ज्यादातर समय वे जमीन पर लेटे रहते हैं। उनके साथ एक औरत, एक शिशु और दो-तीन पांच-सात वर्ष तक के बच्चे दिखते हैं। वे बच्चे और महिला भी चौराहे पर रुकने वाली सवारियों को गुब्बारा बेचते हैं। उनमें से कुछ बच्चे भीख भी मांगते हैं। सोचता हूं कि क्या इनका जीवन बस इतना ही है!

दुनिया मेरे आगे कुछ समय पहले उसी जगह मैंने देखा कि एक तीन-चार वर्ष का बच्चा धूप में ही फुटपाथ पर पड़ा हुआ था। पास ही छाया में एक अधेड उम्र की महिला और कुछ अन्य बच्चे थे। वे सभी गुलाब के फूल को पैक कर रहे थे। मैंने उस बच्चे को धुप में पड़े देख कर कहा- 'यह किसका बच्चा है?' उन सभी ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बाद मैं आगे बढ़ गया। लेकिन मन नहीं मान रहा था, इसलिए फिर पीछे मुड़ कर देखा। इस बच्चे को यों ही छोड़ कर मैं कैसे आगे बढ़ जाऊं ! मैंने दोबारा उनसे कहा- 'उठाते क्यों नहीं हो बच्चे को।' उनमें से कोई नहीं हिला। इसके बाद मैंने जरा ऊंची आवाज में बच्चे को उठाने के

लिए कहा तब उनके बीच से एक व्यक्ति आया और

बच्चे को गोद में उठा लिया।

ऊपर से दिखने में यह संवेदनहीनता का मसला लगता है। लेकिन मेरे खयाल से यहां भी मुख्य प्रश्न है वंचित वर्ग की भूख और इस सामाजिक व्यवस्था का ढांचा। दरअसल, वंचित वर्ग भुख के अलावा इस सामाजिक व्यवस्था से भी लड़ता है। चौराहे पर भी यही प्रश्न है। प्रेमचंद की कहानी 'कफन' में में घीसु और माधव होते हैं। इसमें यही दिखाया गया है कि घीसू और माधव के भीतर

संवेदनशीलता को या तो बुरी तरह प्रभावित किया था या फिर अभाव की दुनिया के संघर्ष में उनके भीतर सोचने-समझने की सहजता बाधित हुई थी। दरअसल, स्वाभिमान या आत्मसम्मान से बड़ी चीज तब भुख हो जाती है, जब व्यक्ति के सामने

भूख की अति ने उनकी

जीवन और भुख से मौत में से किसी एक को चुनने की मजबूरी पैदा हो जाती है। भूख को मिटाना व्यक्ति की पहली जरूरत बन जाती है। कई बार इस क्रम में हुए अवांछित व्यवहारों को समाज स्वीकार नहीं करता है, लेकिन सच यह है कि व्यक्ति की इस स्थिति में सामाजिक व्यवस्था का बहुत बड़ा योगदान होता है।

'कफन' में मौजूद अभाव की तस्वीर का दौर आज भी दिल्ली जैसे शहरों के चौक-चौराहों पर दिख जाता है तो यह हमारे सोचने का वक्त है कि आजादी के इतने सालों बाद हमने क्या हासिल किया है। जब एक भुखा आदमी माया-मोह के बंधन से मुक्ति पाने की बात कह दे तब यह हमें बड़ा असहज लगता है। ऐसा क्यों है ? क्या इसलिए कि वह भूख और अभाव के बीच जीता है? यही बात कोई ऐसा व्यक्ति बोले जिसकी आत्मा तृप्त हो और भूख उसके लिए कभी समस्या रही ही नहीं हो, तब हमें यह अहसज क्यों नहीं लगता? घर-परिवार छोड़ कर संन्यास की ओर निकल गया व्यक्ति अगर माया-मोह से मुक्त होने की बात करता है तब भी हमें स्वाभाविक लगता है।

क्या यह हमारी दृष्टि का विरोधाभास नहीं है? फुटपाथ पर फूल बेच कर गुजारा करने वाले परिवार के बच्चे या ध्रेप में लिटा कर रखा गया बच्चा, उनके मैले-कुचैले कपड़े- सब उनके लिए एक स्वाभाविक स्थिति है। वजह साफ है कि वे सभी साधनों से वंचित हैं। उस दो वक्त की रोटी की पहुंच से दूर हैं, जिसे जुटाने में सुबह से शाम हो जाती है। दूसरी ओर, हमारी व्यवस्था देश की कुल कमाई का तीन-चौथाई हिस्सा सिर्फ एक प्रतिशत लोगों को फायदा पहंचाने के लिए काम कर रही है।

क्वे छले दिनों झारखंड में एक अल्पसंख्यक नौजवान 🌂 को जिस तरह पीट-पीट कर मारा डाला गया, उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा- केंद्र सरकार या झारखंड सरकार या फिर वह भीड जो सीधा मौत का फैसला अपने हाथ से किसी के लिए भी लिख देती है? जमशेदपुर से अपने गांव जा रहे इस युवक तबरेज के साथ जो हुआ वह किसी के साथ कहीं भी, कभी भी हो सकता हैं। इस तरह की घटनाओं से तो यही लगता है। कि लोगों में कानून का भय खत्म हो चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने तो भीड़ लारा हत्या पर कानून भी बनाया। लेकिन क्या हुआ? तबरेज ने कोई गुनाह किया या नहीं किया, यह तो मामला ही नहीं रहा। अब तो बड़ा सवाल यह है कि उसके साथ जो हुआ, क्या वह सही है? झारखंड पुलिस ने जिस तरह की लाचारी दिखाई और झारखंड के एक मंत्री का जो बयान आया, उससे तो नहीं लगता कि ऐसी घटनाएं भविष्य में रुकेंगी। हत्यारों की भीड़ उस समय कहां चली जाती है जब समाज में मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार किया जाता है? सवाल है आखिर हम सब कैसे समाज का निर्माण कर रहे हैं?

• दिनेश चौधरी, सुरजापुर, सुपौल

हिंसा और सवाल

पिछले एक साल में भीड़ लारा की जाने वाली हत्याओं, छेड़खानी, झगड़े-फसाद जैसी घटनाएं तेजी से बढी हैं। ऐसी घटनाओं के वीडियो आए दिन टीवी चैनलों पर या अन्यत्र देखने को मिलते रहते हैं। सवाल यह है कि आखिर इस तरह के वीडियो बनाता कौन है? क्या ऐसा करने वालों को पता रहता है कि अमुक जगह पर ऐसा होने वाला है। कहीं इस तरह की घटनाएं किसी सुनियोजित षड्यंत्र का परिणाम तो नहीं हैं? माना कि

आजकल सब के पास मोबाइल रहता है और व्यक्ति

वीडियों ले। बीच में पड़ने की, मामला सुलटाने की या फिर मोबाइल से ही पुलिस को सूचना देने की उसकी कोई नैतिक जिम्मदारी नहीं बनती? संभव है आक्रोशित-तनावपूर्ण माहौल या फिर किसी और कारण से पुलिस-प्रसाशन तक सूचना न पहुंचा पाना उसकी विवशता रहती हो, मगर मोबाइल से बनाए गए क्लिप को वायरल करना भी कोई समझदारी तो नहीं कहलाएगी। इससे तो देश और समाज का अहित ही

मौकाए-वारदात पर वीडियो ले सकता है। सवाल फिर ही चेत जाता तो शायद इतने बच्चे नहीं मरते। न जाने खड़ा होता है कि क्या यह व्यक्ति इसी काम के लिए रोजाना ऐसे कितने उदहारण देखने को मिलते हैं जिनसे वहां पर खड़ा था कि झगड़ा-फसाद-हत्या हो और वह पता चलता है कि देश की कानून-व्यवस्था में कितनी खामियां हैं, सरकारी तंत्र कितना लापरवाह है जिसके चलते आम जनता को समय पर न्याय नहीं मिलता है। यही हाल अपराधियों का है। पुलिस की लापरवाही से अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और उनमें कानून का कोई डर ही नहीं रह गया है। सवाल है कि आखिर कब सरकारें और प्रशासन चेतेंगे?

संजू कुमार, हनुमानगढ़,

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-८, सेक्टर-7, नोएडा २०१३०१, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आप चाहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com

पकड़ता है। ऐसे वीडियो वायरल करने वालों के खिलाफ भी कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। चाहे वे लोकप्रिय या प्रभावशाली टीवी चैनल ही क्यों न हों! • शिबन कृष्ण रैणा, अलवर

होता है और समाज में कटुता और रंजिश का भाव जोर

लापरवाही की इंतहा यह विडंबना ही है कि कानून के रखवालों को उनके कर्तव्य और दायित्व समय-समय पर याद दिलाने पड़ते हैं। ताजा उदाहरण बिहार के मुजफ्फरपुर जिले का है जहां चमकी बुखार से मरने वाले बच्चों की संख्या डेढ़ सौ के पार चली गई, लेकिन प्रशासन आंखें मूंदा रहा। मजबूरन लोगों को विरोध-प्रदर्शन करना पड़ा। इसके बाद ही प्रशासन हरकत में आया। अगर प्रशासन पहले

अनुठी पहल केंद्र सरकार देश में एक सराहनीय पहल है कि एक देश, एक राशन कार्ड की योजना शुरू करने की दिशा में कदम बढाने पर विचार हो रहा है। कहा जा रहा है कि सरकार जल्द ही इस योजना को लागू करेगी। हाल में केंद्रीय उपभोक्ता मामलों और खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री ने इस योजना को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक भी की। इस योजना के तहत राशन कार्डों के लिए देश भर में पोर्टेबिलिटी की स्विधा शुरू की जाएगी जिससे कि यह सुनिश्चित हो सके कि सभी उपभोक्ता खासकर प्रवासी लोगों को देश

में कहीं भी राशन मिल सके। इसके साथ ही सरकार

ऐसी व्यवस्था करेगी, जिसमें एक ऑनलाइन एकीकृत

व्यवस्था बनाई जाएगी। इसमें राशन कार्ड का डाटा

होगा। इसका एक बड़ा फायदा यह भी होगा कि उपभोक्ता देश के किसी भी हिस्से में होकर किसी भी राशन की दुकान पर सबसिडी वाला अनाज ले सकेंगे। इससे काफी बड़े स्तर पर लोगों को फायदा मिलेगा।

• मेघा सिंघल, आइआइएमटी, ग्रेटर नोएडा प्लास्टिक पर प्रतिबंध

भारत में प्लास्टिक उद्योग आज सवा दो लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। इस उद्योग में पचास लाख से ज्यादा लोग लगे हैं। हाल ही में प्लास्टिक उद्योग की तरफ से बयान आया है कि प्लास्टिक उद्योग को दुगना करने की जरूरत है ताकि इस क्षेत्र में रोजगार बड़े। लेकिन इस उद्योग पर प्रतिबंध लगाने की जरूरत है। प्लास्टिक हमारे लिए बहुत खतरनाक है। प्लास्टिक की वस्तुओं के कारण एक साल में किसी भी मनुष्ये के शरीर में प्लास्टिक के हजारों कण चले जाते हैं, लेकिन केवल प्लास्टिक में खाने-पीने से ही नहीं, बल्कि ये प्लास्टिक के कपड़ों, ट्यूब-टायरों, मोबाइल, पेन-पेंसिल आदि के जरिए भी मानव शरीर में जाते हैं जो कैंसर का एक बड़ा कारण बनता है। प्लास्टिक के जलने से पर्यावरण को बहुत नुकसान होता है। जानवर प्लास्टिक खा लेते हैं जिससे उनकी मोत हो जाती है। प्लास्टिक के कचरे से जमीन और हवा भी प्रदुषित हो रही है। दुनिया के चालीस से जायदा देशो में प्लास्टिक पर प्रतिबंध है, लेकिन भारत में कुछ ही राज्यों में इस पर प्रतिबंध लगा है। लेकिन इसके बावजूद भी इन राज्यों में प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है, क्योंकि नियम तोड़ने वालों पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही। कार्रवाई के नाम पर सिर्फ छोटे व्यापारियों, ठेले वालो के चालान काट दिए जाते हैं। लेकिन प्लास्टिक उद्योग के खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है।

राघव जैन, जालंधरं